इकाई 8 मैक्यावली : गणतंत्रवाद (प्रस्तुतिकरण विषय : नैतिकता और शासनकला, *वर्टू*)*

संरचना

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 इटली के गणतंत्रात्मक नगर-राज्यों का उदय

8.3 सिविक वर्टू और स्वतंत्रता

8.3.1 लिबर्टी अर्थात् स्वतंत्रता

8.3.2 स्वतंत्रता एवं गणतंत्र सुनिश्चित करने हेतु आदर्श

8.4 स्वतंत्रता और गणतंत्रवाद के प्रति आशंकाएँ

8.4.1 भ्रष्टाचार

8.4.2 मिश्रित संविधान

8.4.3 विधि-तंत्र और विधि-निर्माता की भूमिका

8.4.4 बल-प्रयोग अथवा हिंसा

8.5 सारांश

8.6 कुछ उपयोगी संदर्भ

8.7 अपनी प्रगति जाँचें अभ्यासों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

मानव इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि वह परिवेश जिसमें कोई व्यक्ति रहता है, निश्चय ही उसके व्यक्तित्व और विचार-प्रक्रियाओं पर जान-बूझकर अथवा अनजाने में स्थायी प्रभाव डालता है। इस अर्थ में, मैक्यावली जो 'अपने युग का बालक' के रूप में प्रसिद्ध है, राजनीतिक उथल-पुथल और हंगामों के बीच ही पला-बड़ा जो था। उसने इटली के फ़्लोरेंस नामक शहर में, जो कि उसका जन्म-स्थान था, अनेक प्रकार की व्यवस्थाओं का पतन देखा था। यहाँ तक कि उस युग का राजनीतिक प्रसंग भी जटिल और निराशाजनक था। इसने उसे अपने आसपास घट रही घटनाओं के कारण एवं प्रभावों का विश्लेषण करने को बाध्य कर दिया। साथ ही, उसने अपरिहार्य मामलों की परिकल्पना कर अपनी मातृभूमि के घाव भरने के लिए प्रभावकारी क्रियातंत्र खोज निकालने का इरादा कर लिया।

मैक्यावली ने नैतिकता के पतन को भी देखा था और उसका दावा था कि इटली में राजनीति का ईसाई (आचार)-नीति से अब कोई नाता नहीं रहा था और वह राजनीतिक

*रोहित शर्मा, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान के पीजी विभाग, आर्य कॉलेज, लुधियाना

सत्ता के (स्वार्थपूर्ण) अधिग्रहण को ही अपनी बुनियाद मान चुकी थी। अपने युग की अभिभावी दशा के आधार पर आवेश में आकार निकोलो मैक्यावली ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तकें लिख डालीं। इन कृतियों में से एक *द प्रिंस* निस्संदेह आज भी सर्वाधिक व्यापक रूप से पढ़ी जाती है। यही वह पुस्तक थी जिसने उसे अवयश दिलाया क्योंकि इसमें उसने निरंकुश शासन के समर्थन में लिखा था और शासक को दुराचारी बनने का सुझाव दिया था। साथ ही, उसने शासक को सत्ता हथियाने के लिए निस्संकोच अनुचित तरीकों पर भरोसा करने की सलाह भी दे डाली थी। बहरहाल, अपनी एक अन्य महत्वपूर्ण कृति *डिस्कोर्सिस ऑन द टैन बुक्स ऑफ़ टाइटस लिवी* में वह गणतंत्रवाद के एक प्रतिपादक के रूप में उभरा, और उसने तर्क दिया कि केवल सरकार का कोई गणतंत्रवादी स्वरूप ही इटली के नगर-राज्यों में राजनीतिक व्यवस्था को प्रसिद्धि और स्थिरता दिला सकता है। संक्षेप में, इटली का खोया गौरव और एकीकरण फिर से स्थापित करना ही अब उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन गया था।

इस इकाई में आपको सोलहवीं शताब्दी के प्रभावशाली और साथ ही, विवादास्पद दार्शनिक निकोलो मैक्यावली के गणतंत्रवाद संबंधी सिद्धांत से अवगत कराया जाएगा। प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे कि –

- *द डिस्कोर्सिस* नाम पुस्तक में प्रस्तुत अनुसार गणतंत्रवाद के सिद्धांत को समझ सकें;
- गणतंत्र में सिविल वर्टू की भूमिका को समझ सकें;
- गणतंत्र में स्वतंत्रता का महत्व समझ सकें; तथा
- स्वतंत्रता एवं गणतंत्र सुनिश्चित करने हेतु आदर्शों पर चर्चा कर सकें।

8.2 प्रस्तावना

मैक्यावली का पालन-पोषण एक सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक निर्वात में हुआ और वह फ़्लोरेंस नामक नगर-राज्य में हिंसा एवं अभिभावी सामाजिक संघर्षों का गवाह रहा। इसके अंतनिहित कारणों को उजागर करने का उत्साह लिए उसने 'रेआल पोलिटीक' की दृश्यघटना का उदाहरण सामने रखा। अपनी पुस्तक *द प्रिंस* में राज्यों के उत्थान एवं पतन दोनों के कारणों और राजनीतिक सफलता हेतु उत्तरदायी कारकों का विश्लेषण करने के बाद मैक्यावली ने राजा को सलाइ दी कि वह एक अनैतिक प्रकार का प्रबुद्ध स्वेच्छाचारी शासक बने। उसने राजा को इस बारे में अनेक तरीके सुझाए कि वह सत्ता कैसे हथियाकर अपने नाम करे। उसने राजा को सिखाया कि वह सफलता प्राप्त करने के लिए राजनीति में चतुर, मितव्ययी, सुसंस्कृत, सशक्त, निर्णायक एवं निष्ठुर होने के गुण अवश्य अपनाए। इससे स्पष्ठ होता है कि वह इस तथ्य से आश्वस्त था कि सत्ता और राजनीति ही राज्य के परिरक्षण हेतु प्रमुख टेक या स्तंभ होते हैं। इस प्रकार, मैक्यावली के व्यवहारवाद और राजनीतिक यथार्थवाद ने उसे लक्ष्यों को सही ठहराने में मदद की।

मैक्यावली के राजनीतिक विचारों को आकार मुख्यतः उसके अपने अनुभव से मिला, जो कि उसने फ्रंटलाइन गणतंत्र में *टैन* अथवा *'टैन ऑफ़ वॉर,* के सचिव के रूप में पाया था। इसके अलावा, उसके राजनयिक के रूप में दायित्वों ने उसे अपने समय के प्रमुख राजनेताओं से मिलने व सरकार चलाने की उनकी शैली को समझने के अनेक अवसर

प्रदान किए। उदाहरण के लिए, फ्रांस के लुई बारहवें की राजसभा के वीक्षण से उसे फ्रांसीसी सरकार के अंदरूनी कामकाज को करीब से देखने में मदद मिली, जो कि बाद में किसी गणतंत्र की संस्थाओं एवं संगठन के साथ राज्य -व्यवस्था विधि तय करने हेतु उसके प्रतिमान के लिए एक संदर्भ बन गया। इसके अतिरिक्त, समय समय पर इतिहास से मिलने वाली शिक्षाओं में भी उसकी अटूट आस्था रही। उसकी धारणा थी कि इतिहास हमेशा कुछ सीख देता है और यदि कोई व्यक्ति उसकी शिक्षाओं पर ध्यान नहीं देता तो वह उसे निराशा के गड्ढर में धकेल सकता है। उसने समकालीन वास्तविकताओं और भविष्य पर अपनी पैठ जमाने के लिए प्राचीन साहित्य एवं कला की ओर रुख किया। उसमें प्राचीन रोमन गणतंत्र के गौरव की विशेष रूप से झूठी प्रशंसा की। एक संदर्भ बिंदु के रूप में उसने टाइटस लिवी नामक रोमन इतिहासकार की पुस्तक-श्रृंखला *हिस्ट्री ऑफ़ द रोमन रिपब्लिक* को पढ़ा और इटली में उसका सोत्साह अनुकरण करने के लिए राज़ी हो गया।

मैक्यावली रोमवासियों के गौरवमय अतीत के प्रति गहरी ललक रखता था क्योंकि उन्होंने सरकार का गणतंत्रात्मक स्वरूप अपनाया था, जिसके तहत उन्हें असाधारण महानता और शौर्य प्राप्त हुआ। उनके किसी भी शासक ने राजगद्दी विरासत में नहीं पाई थी। इसके अलावा, वह स्वतंत्रता, समर्पण एवं देशभक्ति के लिए उनके जुनून से प्रभावित हुआ और उसने तर्क दिया कि ये सभी गुण किसी भी राज्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, जो कि किसी सरकार के गणतंत्रात्मक रूप में ही संभव होते हैं, अपनी गणतांत्रिक भावनाएँ व्यक्त करते हुए उसने आगे कहा कि किसी भी गणतंत्रात्मक सरकार के तहत सत्ता रईसों और जनसाधारण के बीच आसानी से साझा भी की जा सकती है। उसकी पुस्तक *डिस्कोर्सिस* पढ़ने के बाद आप पाएँगे कि मैक्यावली वैयक्तिक स्वतंत्रता के प्रति उत्कट प्रेम रखता था और उन सभी राजनीतिक गुणों का अडिग प्रेमी था जो राज्य को गौरव दिला सकते हैं। इसके अलावा, रोमन सेना और अपनी समकालीन फ्रांसीसी सेना की भाँति उसने राष्ट्रीय सेनाओं का समर्थन किया जहाँ सत्रह से चालीस वर्ष आयु के सभी समर्थांग पुरुषों के लिए प्रशिक्षण अनिवार्य था। अपनी पुस्तक *द प्रिंस* में भी उसने एक सशक्त राष्ट्रीय सेना रखे जाने पर जोर दिया। अपनी दूसरी पुस्तक *डिस्कोर्सिस* में पुनः उसने नागरिकों की एक सेना समासंघ के महत्व पर ज़ोर दिया और उसे गणतंत्र की सफलता एवं गौरव के लिए अत्यावश्यक माना।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) मैक्यावली के लिए रोम का इतिहास क्यों महत्वपूर्ण था? स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.2 इटली के गणतंत्रात्मक नगर-राज्यों का उदय

गणतंत्र की राजनीतिक अवधारणा मध्यकालीन यूरोप के उत्तरार्ध में जन्मी, जिसकी जड़ें प्राचीन रोमन गणतंत्र में खोजी जा सकती हैं। 'गणतंत्र' शब्द अंग्रेजी के *रिपब्लिक* का हिंदी रूप है, जो कि लैटिन भाषा के *रेस पब्लिका* से उत्पन्न हुआ है। इस अर्थ होता है। सार्वजनिक अथवा सामान्य मामले, तथा यह कुछ संस्थागत व्यवस्थाओं और नैतिक उपदेशों का समर्थन करता है। यहाँ गणतंत्रवाद का नैतिक सरोकार *सिविक* वर्टू की संकल्पना से समझा जाता है, जिसे गणतंत्र के कानूनों का सम्मान और देशभक्ति की भावना विकसित अथवा सम्मिलित करने वाला माना जाता है ताकि किसी भी सैन्य आक्रमण अथवा अत्याचार को रोका जा सके और गणतंत्र में नैतिक भ्रष्टाचार पर नियंत्रण रखा जा सके। चलिए ,अब इटली के नगर-राज्यों में गणतंत्रवाद के इतिहास पर नज़र डालते हैं।

पुनर्जागरण की धुरी होने के बावजूद, जीवंत संस्कृति एवं रचनात्मकता का केंद्र इटली एकीकृत नहीं रहा और फ्रांस, जर्मनी एवं स्पेन के पड़ोसी राज्यों की साम्राज्यिक इच्छा का शिकार बना ही रहा। सत्ता की राजनीति का खेल इटली में जटिल हो आया था। अधिकांश इतालवी राज्यों पर अपने लिए निरंकुश सत्ता का दावा करने वाले किसी कुलतंत्र अथवा स्वयंभू तानाशाह का शासक था। सैनिकों में अखंडता को अपना उच्च भाव कायम रखने के प्रति कोई राष्ट्रीय भावना नहीं देखी जाती थी। वे हमेशा अपने पेशेवर जोखिम को कम करने का प्रवास करते थे। इटली पाँच राज्यों में विभाजित था। इस बात पर इतिहासकार एकमत हैं कि इटली आशाहीन संवैधानिक शर्तों के दलदल में धँसा था, परंतु वह अब भी पुनर्जागरण का पथ-प्रदर्शक था। यद्यपि वह पोपतंत्र का केन्द्र था, उसने अपने धर्मनिरपेक्षता के लक्षण को कभी नहीं छोड़ा। पुनर्जागरण के मूल केन्द्र इतालवी नगर-राज्य थे। ये नगर-राज्य यूरोपीय राजतंत्रों के विशाल सागर में वैयक्तिक गणतंत्रवाद के द्वीपों के रूप में नज़र आते थे। पोपतंत्र और उसके अधिकारों के पतन के साथ ही इतालवी नगर-राज्यों ने स्वास्थापन हेतु आत्मविश्वास अर्जित कर लिया था। संक्षेप में, इटली एक बौद्धिक रूप से प्रतिभाशाली लोागों का समाज था, जो कि कलात्मक रूप से परिपक्व, स्वतंत्रता प्रेमी थे और अपने शांत स्वभाव के साथ राष्ट्रीय एवं साम्राज्यिक दृष्टिकोण रखते हुए दुनिया का सामना करने को भलीभाँति तैयार थे। दुर्भाग्यवश, वह निकृष्टतम राजनीतिक भ्रष्टाचार और नैतिक पतन का शिकार हो गया। इटली के ये प्रबुद्ध जन शासनकला की बात तो करते थे, परंतु राजनीतिज्ञता की नहीं।

समस्त यूरोप में राजनीतिक मंथन अनेक शक्तिशाली नगर-राज्यों को इस प्रायद्वीप में ले आया। इन्होंने स्वतंत्रता संबंधी अपनी ही अवधारणा को परिभाषित किया और कुछ चुनिंदा प्रतिष्ठित व्यक्तियों के शासन को चुनौती देकर शहर के जन-साधारण द्वारा शासन को ही अधिक पसंद किया। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया, इटली में कुछ नगर-राज्य पहले ही गणतंत्रात्मक शासन की अपनी भिन्न व्यवस्था पहले ही कायम कर चुके थे। इन नगर-राज्यों में सत्ता *पोडेस्टा* अर्थात् मुख्य न्यायाधीशों को प्रदान कर दी जाती थी और वे पद पर अधिकतम एक वर्ष के लिए बने रहकर प्रशासन कार्य कार्यकारी परिषदों की एक श्रृंखला के माध्यम से करते थे। बाद में *पोडेस्टा* का स्थान *सिग्नोरी* नामक कार्यपालकों के एक मंडल ने ले लिया। इस बदलाव ने मैक्यावली के गृह-प्रदेश, यथा फ़्लोरेंस, समेत इटली के सभी नगर-राज्यों को प्रभावित किया। फ़्लोरेंस में उसकी गणतंत्रात्मक संस्थाओं

का पतन अपेक्षाकृत धीमा रहा था। ये *सिग्नोरी पोडेस्टा* की तुलना में कही अधिक शक्तिशाली होते थे, परंतु उनके प्राधिकार प्रयोग पर किसी समुचित नियंत्रण का प्रावधान होता था। वर्ष 1434-1494 की अवधि में मैडिची परिवार का शासन आते ही ये नियंत्रण हटा लिए गए और अंततः गणतंत्र का पतन शुरू हो गया।

दिसम्बर 1494 का प्रसिद्ध कानून लाकर *कॉन्सिग्लियो ग्रांड* अर्थात् महापरिषद् की स्थापना के साथ ही गणतंत्र को बहाल कर दिया गया। इस महापरिषद् ने न केवल सार्वजनिक मामलों में अपने नागरिकों की भागीदारी की अनुमति दी, बल्कि उसने उन्हें अनेक प्रशासनिक मंडलों में निर्वाचित होने का अधिकार भी प्रदान किया। जिरोलामो मांरिया फ्रांसुआ मत्तेयो सवोनारोला नामक एक डोमिनिकन मठवासी के नेतृत्व में एक प्रभावशाली गणतंत्र फ़्लोरेंस (1498-1512) में ही स्थापित हुआ। तदंतर, वर्ष 1513 में स्पेनी हथियारों के संरक्षण में जब मैडिची परिवार लौट आया तो इस गणतंत्र को उखाड़ फेंका गया। फ़्लोरेंस में मैडिची के शासन की पृष्ठभूमि में मैक्यावली ने *डिस्कोर्सी सोपरा ल प्राइमा डेका डि टीटो लीवियो* (डिस्कोर्सिस ऑन लीवी) लिख डाली, जिसमें उसने सरकार के गणतंत्रात्मक स्वरूप की ज़ोरदार वकालत की।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) इटली के नगर-राज्यों में गणतंत्रवाद पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

8.3 सिविक वर्टू और स्वतंत्रता

आमतौर पर *वर्टू* की अवधारणा यूनानी दर्शन और ईसाई धर्म में दृष्टिगत होती है, जो कि इसे शील और दया के गुण से जोड़कर देखते हैं। बहरहाल, मैक्यावली ने इस शब्द के परंपरागत अर्थ को पूर्णतः बदल डाला, परंतु उसने लोकहित एवं निजी हितों के बीच परंपरागत संबंध कायम रखा। *सिविक वर्टू* संबंधी उसकी अवधारणा ने आधुनिक राजनीतिक चिंतन एवं व्यवहार के विकास में एक महत्वपूर्ण अवस्था चिह्नित की क्योंकि यह शासनकला (स्टेट क्राफ़्ट) और मानस कला (सोल क्राफ़्ट) के बीच पुरानी संधि का प्रतीक था।

सामान्य वर्टू को नैतिक सत्यनिष्ठा अथवा मनुष्य से अपेक्षित किसी प्रकार की उत्कृष्टता, यथा गणतंत्र की रक्षा हेतु जीवन को जोखिम में डालने की सामरिक गुणवत्ता, के रूप में लिया जाता है। दूसरी ओर, कर्तव्यपराणता को समग्र आत्महित अथवा व्यक्ति के सुखों से ऊपर रखा गया था ताकि वह किया जाए जो जन सामान्य के लिए सर्वोत्तम हो। इसने सिविक वर्टू के लिए एक प्रतिमान की भूमिका निभाई। मैक्यावली ने राजनीतिक नैतिकता की अवधारणा भी विकसित की, जो कि वर्टू की पारंपरिक अवधारणा से भिन्न थी।

उदाहरण के लिए, मैक्यावली के अनुसार, सदाचार अधिकांशतः पुरुष का ही गुण होता है। यहाँ तक कि मैक्यावली ने न केवल चेतनत्व, साहस एवं स्वाग्रह जैसे गुणों की प्रशंसा की, वरन्, क्रूरता एवं धूर्तता को भी सराहा क्योंकि ये गुण गणतंत्र को बचाने में कारगर अथवा सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अतएव, *द प्रिंस* में उसने तर्क दिया कि पारंपरिक सद्गुणों पर निर्भर रहकर शासक अपनी सत्ता लम्बे समय तक कायम नहीं रख पाएगा। परंतु *डिस्कोर्सिस* में उसमें ईसाई धर्म के नागरिक दृष्टिकोण के प्रति अपना सम्मान दर्शाया, जिसे उसने रोमन गणतंत्र के गौरव से जोड़कर देखा था।

इसके अलावा, रोम का इतिहास पढ़ लेने के बाद मैक्यावली ने अपने निष्कर्ष में कहा कि सामाजिक व्यवस्था में दो वर्ग होते हैं। प्रथम, *ग्रॉन्दी* अर्थात् अभिजात वर्ग, और दूसरा, *पोपुलारी* अर्थात् जनसाधारण। इसके अलावा, उसने इन सामाजिक आयामों के पीछे निहित कारणों की जाँच की। उसने पाया कि इन वर्गों पर अनेक प्रकार के हितधारकों और अभियानों का प्रभाव बना रहता है। उदाहरण के लिए, संभ्रान्त व्यक्ति हमेशा दूसरों पर शासन करने की फिराक में रहते थे; इसके विपरीत, साधारण लोग शांतिपूर्वक रहना पंसद करते थे। एक दूसरे अर्थ में, राजनीति के परिक्षेत्र में अभिजात जन महत्वाकांक्षी होते थे, जबकि आम जन अपरिवर्तनवादी थे। इन वर्गों में मेल-मिलाप संभव नहीं होता था – केवल किसी उचित सांस्थानिक व्यवस्था में ही ये दोनों एक साथ देखे जा सकते थे।

फ़्लोरेंस के इतिहास संबंधी अध्ययन में मैक्यावली ने इस नगर-राज्य में स्थानिक सामाजिक संघर्षों एवं हिंसा का विश्लेषण किया और उसमें लिखा माना। उसने संघर्ष को एक स्थायी और सार्वत्रिक घटना दृश्यघटना माना। उसने निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक विहन आधी बाधाओं के दो प्रमुख कारणों के रूप में जन साधारण और अभिजात वर्ग के बीच एक स्वाभाविक वर्ग संघर्ष देखा जाता है। किसी भी राज्य में अस्थिरता का आंतरिक कारण उस घृणा से जन्म लेता है जो निर्धन वर्ग में धनाद्य वर्ग के प्रति पनपी और जहाँ अमीर ने गरीब पर हावी होने का प्रयास किया। यह संघर्ष शासन में एक समान भागीदारी का प्रावधान कर नियंत्रित किया जा सकता है। इसी कारण, राज्य की स्थिरता मुख्यतः इन वर्गों के प्रभावी हितधारकों की संतुष्टि पर निर्भर करती है। यह नागरिक गणतंत्रवाद की स्थापना के लिए कारण हो सकता है। निर्धन वर्ग किसी निरंकुश सरकार अथवा शासन से अपनी रक्षा करने के प्रति जागरूक हो जाता है और एक बेहतर जीवन सुनिश्चित करने के लिए निर्णायक रूप से कार्रवाई करता है। ऐसा करना केवल अभिजात वर्ग के निर्मूलन अथवा सत्ता को साझा करने से ही संभव हो सकता था।

8.3.1 लिबर्टी अर्थात् स्वतंत्रता

अपनी पुस्तक *डिस्कोर्सिस* के प्रथम अनुच्छेद में मैक्यावली ने प्राचीन रोम में स्वतंत्रता विकसित होने का वर्णन किया और तर्क दिया कि वे जिन्होंने किसी गणतंत्र को गठित करने में समझदारी दिखाई थी, स्वतंत्रता की रक्षा किए जाने को उन सर्वाधिक अनिवार्य वस्तुओं में से एक के रूप में देखा जिनकी उन्हें व्यवस्था करनी थी।

'डिस्कोर्सिस' पर अपनी तीन पुस्तकों में मैक्यावली ने स्वतंत्रता संबंधी अपने प्रकरण प्रस्तुत किए। प्रथम पुस्तक में इस बात पर चर्चा है कि रोमवासियों ने राजाओं के शासन का अंत कैसे किया और कैसे गणतंत्रात्मक स्वतंत्रता के माध्यम से उन्होंने महानता हासिल की। दूसरी पुस्तक में रोम की सैन्य शक्ति के विस्तार को सोदाहरण समझाया गया है और

बताया गया है कि लोगों को अपेक्षित स्वतंत्रता कैसे प्रदान की जाए। तीसरी पुस्तक में स्वतंत्रता के सातत्य हेतु रोमवासियों के प्रयासों के विषय में चर्चा की गई है।

8.3.2 स्वतंत्रता एवं गणतंत्र सुनिश्चित करने हेतु आदर्श

मैक्यावली ने स्वतंत्र और परतंत्र राज्यों के बीच भेद स्पष्ट किया। उसके अनुसार, राज्यों को अपनी इच्छानुसार ही अपने ऊपर शासन करना चाहिए। उसका मत था कि स्वतंत्रता से न केवल सशक्त राज्य बल्कि सशक्त व्यक्ति भी जन्म लेते हैं, जिनकी शक्ति दूसरों पर प्रभुत्व अथवा प्रभाव जमाने में नहीं होती, बल्कि उनके दृष्टिकोण की स्वतंत्रता में और उनकी अपने लिए सोचने व निर्णय लेने हेतु क्षमता में होती है। एक अन्य अर्थ में, मैक्यावली ने स्वतंत्रता की तुलना स्वशासन और स्वाधीनता से की, जिसमें नागरिक अपने राजनीतिक अधिकारों का प्रयोग करते हैं और गणतंत्र की आंतरिक एवं बाह्य अखंडता की रक्षा करने में सक्रिय भागीदारी भी निभाते हैं।

मैक्यावली का विश्वास था कि जब लोगों में शासक की किसी भी प्रकार की स्वेच्छाचारिता का भय नहीं होगा तो ऐसी स्थिति में वे अपने गुणों के माध्यम से अपने नगर का गौरव बढ़ाने में योगदान दे सकेंगे। एक अर्थ में मैक्यावली के अनुसार, जब कोई राज्य किसी भी बाह्य शक्ति से मुक्त, प्रभुसत्ता संपन्न होता है तो लोग भी स्वयं को सशक्त और सामर्थ्यवान अनुभव करते हैं। वे स्वतंत्रता के प्रति लगाव बढ़ा लेते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि इससे वे अपनी पैतृक सम्पत्ति से वंचित नहीं होंगे और उनका परिवार व बच्चे खुली हवा में साँस लेंगे। इसी कारण, मैक्यावली के अनुसार, केवल एक गणतंत्र ही लोगों की आज़ादी सुनिश्चित और संरक्षित कर सकता है। परंतु ऐसा तभी संभव हो सकता है जब नागरिक वर्ग *सिविक वर्टू* का प्रदर्शन करे। दूसरे शब्दों में, मैक्यावली ने जोर देकर कहा कि वर्टू अपेक्षा करता है कि राज्य के जीवन एवं उसकी स्वतंत्रता के रक्षा करने के लिए व्यक्तिगत सनक को एक तरफ कर दिया जाए।

आइए, नगर-राज्यों की रक्षा और नागरिकों के सेना पर ज़ोर को स्पष्ट रूप में समझे। मैक्यावली की यह अवधारणा उसके समय की राजनीति, खासकर इतालवी राजनीति, संबंधी उसके पर्यवेक्षण पर आधारित थी, और कहा जा सकता है कि किसी भी गणतंत्र में नागरिकों की एक सुप्रशिक्षित सेना उसके अनुरक्षण के लिए अपरिहार्य होती है। उसने भाड़े की सेना की कड़ी निंदा की और उसके स्थान पर नागरिकों की सहायक सेना रखे जाने की इच्छा व्यक्त की। साथ ही, उसने कहा कि नागरिकों को राज्य के जीवन एवं स्वतंत्रता की रक्षा करने हेतु अपने कर्त्तव्य से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए। संक्षेप में, निजी लाभ की अपेक्षा लोकहित को महत्व देकर नागरिकों को देशभक्त बनाया जाए, और बदले में, वे एक स्थिर गणतंत्र के मूलभूत अंग बन जाएँगे।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) मैक्यावली ने सिविक वर्टू और स्वतंत्रता को क्यों महत्व दिया? सोदाहरण स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

8.4 स्वतंत्रता और गणतंत्रवाद के प्रति आशंकाएँ

8.4.1 भ्रष्टाचार

मैक्यावली ही राजनीतिक जीवन में भ्रष्टाचार की भूमिका का अध्ययन करने कला प्रथम विद्वान था। उसके अनुसार, युयुत्सा गुण का अभाव नागरिक गुणों के ह्रास की ओर ले जाता है और तदनुसार, इतालवी समाज नैतिक पतन और राजनीतिक भ्रष्टाचार का शिकार बन गया। कुल मिलाकर, कोई गणतंत्र अपना अस्तित्व तभी बचाकर रख सकता है जब लोग नागरिक गुणों से सम्पन्न हों। मैक्यावली ने विलासी आदतों और नैतिक पतन के बीच अंतर्संबंध को गणतंत्र की स्वतंत्रता के प्रति एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण खतरे के रूप में देखा। इसके अलावा, उसका पक्का विश्वास था कि जब नागरिक अपने व्यक्तिगत हितों का मोहछोड़ देंगे तो गणतंत्र को राजनीति से मुक्त रखा जा सकेगा। राजा को अपने नागरिकों द्वारा अपने निजी हितों से ऊपर उठकर नागरिक गुण अपनाए जाने के लिए कानून बनाने की आवश्यकता भी पड़ सकती है। इस प्रकार, जब नागरिक अपने कृत्यों के कानूनी परिणामों के प्रति जागरूक हो जाते है तो राज्य में कानून और व्यवस्था को आसानी से कायम रखा जा सकता है। मैक्यावली के अनुसार, इसीलिए, एक मिश्रित संविधान यह सुनिश्चित कर सकता है कि राजनीतिक सत्ता गणतंत्र के हित में ही प्रयोग की जाए। गणतंत्र के लिए आवश्यक है कि उसे भ्रष्टाचार से बचाकर रखा जाए। इस कारण से मैक्यावली ने कानूनों को कुशलतापूर्वक निष्पादित किए जाने के लिए एक विधि-सम्मत कार्यतंत्र का प्रस्ताव रखा और स्वेच्छा चारिता के उन्मूलन हेतु विधि-सम्मत समानता का आश्वासन दिया।

8.4.2 मिश्रित संविधान

मैक्यावली ने विभिन्न प्रकार की सरकारों के बीच भेद नहीं किया; बल्कि उसने सरकार संबंधी अरस्तु का वर्गीकरण स्वीकार किया, यथा। निरंकुश शासन, अल्पजनाधिपत्य एवं समानता जैसे अपने विकृत स्वरूपों के साथ ही राजतंत्र, कुलीनतंत्र एवं जनतंत्र। उसका निष्कर्ष था कि आरंभ में इन्होंने एक स्थिर सरकार दी परंतु फिर नियंत्रण एवं संतुलन के अभाव में ये पतित हो गए। अतएव, उसने सरकार के एक मिश्रित रूप को मान्यता दी। उसका कहना था कि एक मिश्रित प्रकार की सरकार में मनमाने शासन पर प्रतिनिधित्व करने वालों संस्थाओं के माध्यम से नियंत्रण रखा जा सकता है।

राज्य की आंतरिक एवं बाह्य स्वतंत्रता को कायम रखने के लिए उसने गणतांत्रिक सरकार पर ज़ोर दिया। उसने नागरिकों तक राजनीतिक सत्ता के विस्तार के विषय में भी बात की ताकि वे अपने राजनीतिक अधिकारों को बुद्धिमानी से प्रयोग कर सकें। इन शर्तों को एक मिश्रित सरकार के ढाँचे के भीतर ही पूरा किया जा सकता है। उसके अनुसार, रोमन गणतंत्र ने सरकार का एक मिश्रित रूप अपने एक उत्कृष्ट उदाहरण स्वरूप सामने रखा था, जिसमें कॉन्सल अर्थात् राजदूत गणतंत्रीय सिद्धांत की 'सीनेट' अर्थात् वरिष्ठ सभा कुलीनतंत्रीय सिद्धांत की, और 'कोमेशिया' एवं 'ट्रिब्यून्स' अर्थात् फौजदारी के हाकिम

लोकतांत्रिक आदर्शों की तस्वीर प्रस्तुत करते थे। इसके परिणामस्वरूप, लोकहित को प्रोत्साहन और लोगों की स्वतंत्रता को संरक्षण देते हुए गुटबंदी से बचाव हो जाता था। ये सभी बातें किसी भी गणतंत्रात्मक राज्य की स्थिरता के लिए अत्यावश्यक होती हैं।

8.4.3 विधि-तंत्र और विधि-निर्माता की भूमिका

मैक्यावली की धारणा थी कि स्वतंत्रता केवल विधि-तंत्र अर्थात् कानून-व्यवस्था में रहकर ही संभव हो सकती है। कानून ही किसी भ्रष्ट शासक से लोगों की रक्षा कर सकता है और वही उन्हें शासक की स्वार्थ सिद्धि में लगे रहने जैसी स्वाभाविक आत्म-विनाशकारी प्रवृत्ति का शिकार होने से बचा सकती है। उसका मानना था कि कोई भी शासक धर्म के साथ-साथ अच्छे कानूनों की सहायता से भी *सिविक वर्टू* को उनके मन में बैठा सकता है।

मैक्यावली ने विधि-निर्माता की भूमिका को काफी महत्व दिया। किसी भी कानून बनाने वाले का पहला काम ऐसे कानून बनाना होता है जो स्वतंत्रता का आश्वासन देकर उसकी रक्षा कर सकें। रोम ऐसी ही नई संस्थाओं को जन्म देने के अपने सतत प्रयासों के कारण ही महानता हासिल कर सका जो स्वतंत्रता संभव बना सकीं। इसी कारण, मैक्यावली ने अपनी कार्य-योजना में विधि-निर्माता और विधि अर्थात् कानून को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। बल, छल और भय किसी भी समाज और राज्य के लिए कोई ठोस आधार नहीं बनते तथा शासक द्वारा इनके प्रयोग को किसी ऐसे बल से सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता पड़ती है जो मनुष्य द्वारा कहीं बेहतर पसंद किया जाता हो, और वह कानून ही है। कानून समाज व राज्य के लिए अपरिहार्य है। यह लोगों के राष्ट्रीय चरित्र को गठित करता है। यह लोगों में नैतिक एवं नागरिक गुण विकसित करता है। ये गुण सभी राज्यों के लिए उत्तम होते हैं, जबकि गणतंत्रों के लिए तो अपरिहार्य ही होते हैं। मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण कानून ही समाज और राज्य को एक सूत्र में बाँधकर रखने का सबसे प्रभावशाली माध्यम होता है क्योंकि यह स्वार्थी व्यक्ति को उसके नैतिक दायित्वों का सम्मान करने के लिए बाध्य करता है। यही कारण है कि एक बुद्धिमान विधि-निर्माता अतीव महत्व रखता है। वह न केवल राज्य का, बल्कि उस समाज का भी वास्तुकार होता है जिसमें उसकी नैतिक, धार्मिक और आर्थिक संस्थाएँ शामिल होते हैं।

8.4.4 बल-प्रयोग अथवा हिंसा

मैक्यावली ने केवल राज्य के *रेज़ॉन डेंटा,* के लिए ही बल-प्रयोग अथवा हिंसा के प्रयोग की सलाह दी, यथा। कोई भी गणतंत्र अपने विस्तार एवं विजय अभियानों के लिए इसका इस्तेमाल कर सकता है। परंतु, साथ ही, उसने हिंसा को एक आघात-चिकित्सा विधि के रूप में लिया, जो कि भ्रष्टाचार मिटाकर *सिविक वर्टू* में नया रक्त-संचार कर सकती है। यहाँ, एक बार फिर, उसने कहा कि विधि-नियम नागरिकों के व्यवहार को नियंत्रित कर शांति एवं स्थिरता कायम कर सकता है। फलतः मानव व्यवहार को नियंत्रित करने हेतु बल प्रयोग करने के अवसर कम ही बचेंगे। चूँकि उसका विश्वास था कि सरकार का गणतंत्रात्मक स्वरूप, जहाँ लोगों की भागीदारी के सामाजिक शक्ति के रूप में निरूपित होती है, किसी भी समाज में हिंसा का प्रयोग घटा सकता है, बशर्ते उसे सही रीति से ही प्रयोग किया जाए। उसका यह कथन ठीक है कि किसी कमज़ोर शासन-व्यवस्था को ही राज्य में मामले सही ढंग से निबटाने के लिए हिंसा और क्रूरता का प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ सकती है। हिंसा के प्रयोग पर काबू रखना और आम सहमति के माध्यम से मानव लागत न्यूनतम करने का प्रयास करना सदा ही बेहतर होता है।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 4

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) गणतंत्र सुनिश्चित करने हेतु मैक्यावली द्वारा अनुभव किए गए आदर्शों पर प्रकाश डालें।

.....

.....

.....

.....

.....

8.5 सारांश

संक्षेप में कहें तो पुनर्जागरण काल में संस्थाओं के इर्दगिर्द आकार ले रहे उग्र सुधारवादी परिवर्तन और शासन-व्यवस्था विषयक अवधारणाएँ मैक्यावली की प्रमुख पुस्तकों में स्पष्ट प्रतिबिंबित होते हैं। वह एक ऐसा व्यक्ति था जो अपने समय के नैतिक एवं राजनीतिक भ्रष्टाचार से निश्चित रूप से परिचित था। उसे अतीत की ललक थी और वह प्राचीन रोम की भाँति एक सामंजस्यपूर्ण एवं शांतिमय सामाजिक जीवन की कल्पना करता था।

मैक्यावली से पूर्व राजनीतिक सत्ता को न्याय, कानून, उत्तम जीवन एवं स्वतंत्रता, आदि कुछ उच्चतर लक्ष्य हासिल कर लेना ही समझा जाता था। उसने राज्य के इन सभी नीतिपरक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक लक्ष्यों को निरस्त किया। उसने राजनीतिक सत्ता को स्वयं में ही एक लक्ष्य माना और अपने अनुसंधान को उस साधन तक ही सीमित रखा जो सत्ता हासिल करने, उसे कायम रखने व उसे विस्तार प्रदान करने के लिए उपयुक्त हो। उसने सत्ता की अवधारणा को नैतिकता की अवधारणा और धर्म से अलग ही रखा। उसने राजनीति और धार्मिक सिद्धांतों के बीच गहरा अंतर बताया और धर्म को राज्य लक्ष्य हासिल करने का एक साधन मात्र माना। नैतिक मूल्यों की बुनियाद पर रखी राजनीति की नींव को झकझोर कर मैक्यावली ने समकालीन युग के एक प्रमुख प्रसंग हेतु माहौल तैयार किया, जिसने राजनीति के धर्मनिरपेक्षीकरण के साथ-साथ अनैतिक विषयों पर भी विचार किया जाना स्वीकार किया।

मैक्यावली के राजनीतिक चिंतन का रुझान मनुष्य को अपनी राजनीतिक धूर्तता में पहले से अधिक अटल और कुशल बनाने के प्रति रहा। अतएव, उसने सरकारी सत्ता की स्थापना एवं उसके विस्तार का सफलतापूर्वक बचाव करने के लिए राजनीति को आचरण के सभी मानकों से पृथक करने के लिए एक योजनाबद्ध प्रयास किया। नैतिकता पर की गई उसकी टिप्पणियों का नितांत आशय शासनकला के उस ढंग की अधिक व्यापक स्वीकार्यता हेतु रास्ता साफ करना था जो उसे सिखाना था। इसी कारण पाप के प्रति अपनी सहानुभूति दर्शाने के लिए उसकी बेहद निंदा की जाती है। इसी वजह से उसे दुनिया में पहचान मिली। चेस्टर सी. मैक्सी के शब्दों में, "वह राजनीतिक साहित्य के

इतिहास में संभवतः सर्वाधिक सर्वत्र निंदित व्यक्ति है; एक ऐसा व्यक्ति जिसके नीति वचन सिद्धांततः सर्वत्र नकारे जाते हैं, परंतु व्यवहारतः नियमित रूप से अपनाए जाते हैं।"

आलोचकों ने दुर्भाग्यवश *द प्रिंस* पर अधिक ज़ोर दिया है, जबकि मैक्यावली को सर्वोत्तम ढंग से *डिस्कोर्सिस* में समझा जा सकता है। पुस्तक *द प्रिंस* एक उद्देश्य विशेष से लिखी गई थी, जबकि *डिस्कोर्सिस* में आप लेखक में गणतंत्रीय रंगों की छटा देख सकते हैं। उसका स्पष्ट कथन है कि अनेक लोगों से साझा किए जाने पर सरकार अधिक स्थिर रहती है। वह वंश-परंपरा का तुलना में चुनावों को अधिक पसंद करता है। वह लोकहित के मापदंडों का प्रस्ताव रखने के लिए आम आज़ादी के समर्थन में है। वह विचार-विमर्श की स्वतंत्रता की अनुमति देता है ताकि हर समस्या के भले-बुरे पहलुओं पर सुनवाई कर कोई मापदंड विशेष लागू किया जा सके। उसका कहना है कि लोग स्वाधीन एवं सशक्त होने ही चाहिए ताकि वे सामरिक गुण अर्जित कर सकें। मैक्यावली केवल उन नागरिकों के बीच सार्वजनिक भाव फिर से जगाना चाहता था जो अपने छोटे-मोटे हित एक तरफ रखकर असभ्य लोगों से राज्य को निरापद करने के लिए शासक की मदद करें। उसका एकमात्र सपना अपनी जन्म-भूमि को समृद्ध देखना था।

8.6 कुछ उपयोगी संदर्भ

- वेबर, मार्क (सं0) (2010). *इन्साइक्लोपिडिया ऑफ़ पॉलिटिकल थ्योरी.* खंड 2. कैलिफोर्निया. सेज पब्लिकेशन्स. इंक.
- भंडारी. डॉ. आर. (1975). *हिस्ट्री ऑफ़ यूरोपीयन पॉलिटिकल फ़िलॉसफी.* बंगलौर. बंगलौर प्रिंटिंग एंड पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड.
- नेल्सन. एटिक. (2006), नैशनलिज़्म एंड मल्टी नैशनलिज़्म जॉन एंस. ड्राइजेक. बोनी हॉनिग एवं एन फिलिप्स. (सं). *द ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ पॉलिटिकल थ्योरी.* न्यूयार्क. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- झा. शेफाली. (2018). *वैस्टर्न पॉलिटिकल थॉट : फ्रॉम द एन्शंट ग्रीक्स टू मॉडर्न टाइम्स.* नोएडा. पीयरसन इंडिया एजुकेशन सर्विसिज़ प्राइवेट लिमिटेड.
- मैकक्लालैंड. जे. एस. (2005). *ए हिस्ट्री ऑफ़ वैस्टर्न पॉलिटिकल थॉट.* लन्दन. रूटलेज.
- मॉरो. जॉन. (2005). *हिस्ट्री ऑफ़ वैस्टर्न पॉलिटिकल थॉट :* ए थीमैटिक इंट्रोडक्शन. न्यूयार्क. पैल्ग्रेव मैकमिलन.
- मुखर्जी. सुब्रत एवं एस. रामस्वामी (??). *ए हिस्ट्री ऑफ़ पॉलिटिकल थॉट : प्लेटो टू मार्क्स.* नई दिल्ली. पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लि.
- सेठी. योगेन्द्र एवं एम.एल.धवन. (1959). *रीडिंग्स इन पॉलिटिकल थॉट.* दिल्ली. आत्मा राम एंड संस.
- सिंह. सुखवीर. (1994). *हिस्ट्री ऑफ़ पॉलिटिकल थॉट,* खण्ड I. मेरठ. रस्तोगी एंड कंपनी.
- स्किनर. क्वन्टिन. (2000). *मैक्यावली : ए वेरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन.* न्यूयार्क. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

- सुदा. जे.पी. (1970), *ए हिस्ट्री ऑफ़ पॉलिटिकल थॉट : फ्रॉम मैक्यावली टू बुर्के,* खंड II. मेरठ. जय प्रकाश नाथ एंड कंपनी.
- हेवुड. एंड्रयु. (2013). *पॉलिटिकल थ्योरी : एन इंट्रोडक्शन.* पैल्ग्रेव मैकमिलन. न्यूयार्क.
- नैडर्मैन. केरी. (2019). निकोलो मैकियावेली. *स्टेनफोर्ड इंसाइक्लोपीडिया ऑफ़ फ़िलॉसफ़ी,यूआरएलः* https://plato.stantord.edu/entries/,machiavellli/

8.7 अपनी प्रगति जाँचें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 1

1) अपने उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं को स्पष्ट करें।

- आमतौर पर मैक्यावली के लिए इतिहास का महत्व
- रोम में गणतंत्रात्मक सरकार
- स्वतंत्रता के लिए रोमवासियों का जुनून
- रोम के लिए उनका समर्थन भाव एवं देशभक्ति की भावना

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 2

1) अपने उत्तर में निम्नलिखित बिदुंओं को स्पष्ट करें।

- मध्ययुगीन यूरोप के उत्तरार्ध में गणतंत्र की अवधारणा जन्मी।
- राजनीतिक मंथन के दौरान अनेक शक्तिशाली नगर-राज्यों ने स्वतंत्रता संबंधी अपनी-अपनी अवधारणाओं को परिभाषित किया और कुछ चुनिंदा प्रतिष्ठित व्यक्तियों के शासन को चुनौती देकर शहर के जनसाधारण द्वारा शासक को ही अधिक पसंद किया।
- गणतंत्रात्मक संस्थाओं का मंथर अवपतन।
- वर्ष 1434-1494 में मैडिची परिवार का शासन।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 3

1) अपने उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं को स्पष्ट करें।

- राज्य की रक्षा हेतु शासक में सिविक वर्टू, यथा-सामरिक गुण।
- सिविक वर्टू राज्य एवं वैयक्तिक स्वतंत्रता के संरक्षण हेतु आवश्यक देशभक्तिपूर्ण मूल्य एवं सार्वजनिक उत्साह लोगों के मन में बैठाता है।

अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 4

1) अपने उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं को स्पष्ट करें।

- भ्रष्टाचार
- मिश्रित संविधान
- विधि-तंत्र और विधि-निर्माता की भूमिका
- बल-प्रयोग।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY